ॐ

"ॐ श्री गणेशाय नम:"

"धार्मिक व आध्यात्मिक विचार"

176। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की बडी विचित्र माया है। आकाश गंगा में एक "ब्लैक होल" होता है। इसको ब्रह्मांड की एक मायावी वस्तु समझा जाता है। "ब्लैक होल" एक मृत तारा होता है जिसमें किसी भी चीज को खींचने की जबरदस्त गुरूत्वाकर्षण शक्ति होती है यह अपने पास आने वाली हर चीज को सोख लेता है यहाँ तक कि ब्रह्माँड में सबसे तेज गति वाला प्रकाश भी बच नहीं सकता। ब्रह्माँड की मेघ शक्ति के प्रभाव , प्रताप के बारे में कुछ नहीं कह सकते।

177। हृदय से उसको एकांत में याद करने ,आराधना करने व रोने से चित्त शुद्ध होता है। चित्त की शुद्धि परम आवश्यक है। इससे सब पापों का नाश होता है शत्रु भी मित्र बन जाते हैं हृदय के सब विकार दूर होकर भगवद् प्राप्ति होती है।

178। सच्चे संतों का जीवन त्याग बलिदान और तपस्या का होता है दूसरों की भलाई के लिये अपने सुखों का त्याग करना अपनी निन्दा करने वाले की भी मन वाणी से सेवा करना और विश्व की भलाई के लिये अपना सर्वस्व त्याग करना उनका स्वाभाविक कर्म होता है उनका स्थान भी ईश्वर से कम नहीं है। उसी का रूप होते हैं।

179। समय और काल बडे क्रूर होते हैं इनसे कोई भी नहीं बच पाता है। भरा पूरा यौवन जो अपने समय में पूरे निखार पर होता है, सुन्दरता जिस पर सब मुग्ध होते हैं ,जो सब को आकर्षित करती है समय बीत जाने पर वही सब समाप्त हो जाता है, सपना सा लगता है और काल तो उसका नामोनिशान ही मिटा देता है, यह कैसी प्रकृति की विडम्बना है।

180। आजकल के कलयुगी दूषित वतावरण में महिलाओं व पुरुषों को अपने उद्धार के लिये हृदय से जप भजन व कीर्त्तन सत्संग करना बहुत आवश्यक है। इससे हृदय तो निर्मल होगा ही ईश्वर को पाने का मार्ग भी सुलभ होगा ।

181। हिन्दू धर्म के अनुसार हम सब प्राणियों के हजारों जन्म हो चुके हैं हम सब एक दूसरे के प्रियजन व सगे संबंधी रह चुके होंगे यहां तक कि इनमें से कुछ हमारे मां बाप भी रह चुके होंगे इसलिये हमें सभी को स्नेहमयी दृष्टि से देखना चाहिये आदर देना चाहिये सबका दुख बांटना चाहिये सब में परम ब्रह्म परमात्मा व्याप्त है।

182। निस्वार्थ भाव से व प्रेम से किसी की सेवा व सहायता करना पुण्य है पर स्वार्थ भाव से किसी की सेवा व सहायता करना पाप है।

183। गृहस्थ में रहकर जिसने अपने मन व सब इन्द्रियों को वश में कर लिया है एकाग्रचित्त हो गया है वही सच्चा साधु है केवल साधु की वेशभूषा पहनने वाले ढोंगी भी हो सकते हैं यदि उनका मन एकाग्र नहीं हुआ है।

184। किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र को आगे बढने के लिये संयम अनुशासन व मर्यादा का सुचारू रूप से पालन करना पडता है।तभी वह उन्नति मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

185। दीपक में प्रज्वलित अग्नि मनुष्य को अन्तिम समय के साथ का बोध कराती है , जब चिता में मृत शरीर पडा होगा , जीवन साथी व प्रियजन सब दूर खडे होंगे , अग्नि ही उसका आलिंगन कर साथ देगी व उसे पापों से मुक्त करायेगी ।

186। संसार में मकान, जमीन, आभूषण आदि व किराये की वस्तुओं में बहुत थोडा ही अन्तर है जब तक सांस है तब तक ही उपयोग कर सकते हैं उसके बाद कोई संबंध नहीं रहेगा, वैसे ही किराया न देने पर किसी चीज से संबंध नहीं रहता ।

187। सुनहरी यादों के सहारे जीवन के कुछ क्षण ही तो बिताये जा सकते हैं पूरा जीवन तो नहीं बिताया जा सकता है।

188। आवश्यकता से अधिक झूठ बोलने से व्यक्ति झूठ और सत्य का अन्तर भी जान नहीं पाता है।

189। समस्यायें स्वंय अपने आप में समस्यायें होती हैं उनको हल करने के लिये भी समस्याओं का सहारा लेना पडता है।

190। आवश्यकता से अधिक बोलने से झूठ को बढावा मिलता है आत्मबल कम होता है, मूक रहने से आत्मबल बढता है व्यक्ति सत्य निष्ठ होता है।

191। तप और त्याग ये दो अनमोल रत्न हैं जिन्होंने इनको पा लिया है वे धन्य हैं भवसागर के सब बंधनों को त्याग कर वे सदा के लिये उस परमात्मा की ज्योति में विलीन हो जाते हैं उनका पुनर्जन्म नहीं होता ।

192। सुख और प्रसन्नता ग्रहण करने की नहीं बांटने की वस्तु है दुख ग्रहण ही किया जाता है बांटा नहीं जाता ।

193। धर्म का अर्थ है न्याय और सत्य की स्थापना करना । सब महापुरुषों ने न्याय और सत्य की स्थापना के लिये धर्मशास्त्रों की सहायता की प्रेरणा दी है।यही कार्य श्री कृष्ण ने महाभारत में न्याय और सत्य के लिये किया था ।

194। शुद्ध व सात्विक आहार से अंत:करण की शुद्धि होती है और इससे बुद्धि शुद्ध और स्थिर होती है जिससे अज्ञान दूर होता है और सच्चा आत्मिक ज्ञान व भगवद् प्राप्ति होती है। शाकाहारी भोजन अति उत्तम है।

195। एक अबोध बालक के लिये उसकी मां ही ईश्वर का रूप होती है उसकी क्षुधा तो शांत करती ही है आत्मिक स्नेह , सुरक्षा व ममता भरा प्रेम भी देती है । मां की गोद में शिशु प्रेम में किलकारियां देता हुआ हंसता खेलता है, दोनों ही एक दूसरे के प्रेम में तल्लीन रहते हैं यही "निस्वार्थ नैसर्गिक मातृ प्रेम" होता है।

196। आज की दुनियां एक बहुत बडा हमाम है जिसमें सभी लोग वस्त्रहीन हैं किसी भी वर्ग , जाति , विभाग व धर्म का हो जिसको जैसा मौका मिल रहा है पूरा फायदा उठा रहा है। न देश का खयाल है न इंसानियत का , चारों ओर आतंकवाद फैला हुआ है।रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं किसी को भी ऊपर वाले की सत्ता का डर नहीं है। नैतिकता ताक पर रख नंगे नाच हो रहे हैं, गरीबों को लूटा जा रहा है । हे प्रभो, मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूं , कब वह दिन आयेगा जब उन्हें सद्बुद्धि मिलेगी या हम केवल प्रलय के बाद ही नये विश्व के निर्माण पर सच्चाई , ईमानदारी, खुशहाली, शान्ति व त्याग का बागीचा देख सकेंगे , जिसमें हर चेहरा हंसता खेलता मुस्कराता व कांतिमय होगा।

197। बुरी प्रवृत्तियों से बचने वाले , बुरे कर्मों व भोगवासनाओं में रूचि न रखने वाले में तत्व ज्ञान का विकास हो जाता है वह आत्मज्ञान प्राप्त कर इस मायारूपी संसार से मुक्ति पा लेता है।

198। श्रद्धा व समर्पण की भावनाओं से की हुई भक्ति व आराधना से मुक्ति मिलती है।

199। कभी हरि सुमिरन नहीं किया , हृदय से याद नहीं किया , कभी उसे जानने का प्रयत्न नहीं किया तो सब बेकार है। वेद पुराण व शास्त्रों का पूरा ज्ञान, धर्म शास्त्रों का ज्ञान भी बेकार है। उसको पाने के लिये केवल हार्दिक प्रेम व राग भक्ति की ही आवश्यकता है।

200। भजन ध्यान आराधना से एक ऐसी ज्योति प्रज्चलित होती है कि व्यक्ति के मुख से निकले शब्द व ज्ञान की बातें वेदों शास्त्रों जैसी ही जान पडती हैं मानों उसके मुख में ईशवर का वास हो।

201। जिस प्रकार एक भक्त ईशवर को पाने के लिये आत्म विभोर होकर हृदय से उसकी आराधना करते समय खो जाता है ठीक उसी प्रकार एक संगीतज्ञ भी अपने स्वर साधते समय ,अभ्यास करते समय तन मन से अपने संगीत में खो जाता है यही उसकी आराधना तपस्या है व इसी तरह ईश्वर को पाने के लिये अपने मन की शुद्धि करता है।

202। महापुरूषों के उपदेश व आदेशों के श्रवण मात्र से कुछ नहीं होता जब तक हम उसे व्यवहार में न लायें , उन पर आचरण करने से हृदय में पवित्रता आती है, आत्म ज्ञान होता है , ईश्वर को पाने का मार्ग खुल जाता है।

203। संसार में मनुष्य द्वारा निर्मित व ईश्वर द्वारा निर्मित दोनों ही तरह की वस्तुयें हैं एक माया जाल में भ्रमित करती हैं दूसरी पापों से मुक्ति दिलाती हैं ।

204। समय के अनुसार अवस्थायें बदलती रहती हैं, बाल्यावस्था, युवावस्था , वृद्धावस्था मानवी जीवन के रूप हैं , नया पुराना संसारी वस्तुओं का रूप है। पर बह्म और आत्मा में कोई बदलाव नहीं आता, केवल शरीर बदलते रहते हैं ।

205। संसार में वस्तुओं की कामना जब तक रहती है कर्म भी जुडा रहता है, कर्म में विघ्न पडने से क्रोध, लोभ , चिन्ता व अशान्ति भी रहेगी । त्याग से ही सच्ची शान्ति मिल सकती है ।

206। ईशवर ने हम सबको एक ही अवस्था में जन्म दिया है सभी संसार के सदस्य हैं , अमीर गरीब छोटा बडा संसार की ही देन है। यदि हम सबमें प्रेमभाव रखें , सबके अधिकारों का खयाल

रखें , भावनाओं का आदर करें , सबको ही परिवार का सदस्य समझें उनके दुख में दुखी हों सुख में सुखी हों , ऐसी ज्योति विश्व में जलायें तो विश्व में स्वर्ग उतर आयेगा ।

207। जैसे बर्तनों के बदलने से गंगाजल की पवित्रता कम नहीं होती , उसी प्रकार शरीरों के बदलने से आत्मा की पवित्रता कम नहीं होती ।

208। रे मन चेतो ! प्रभु को याद करो, मुक्ति मिल सकती है, अन्यथा चौरासी लाख योनियों में भटकना पडेगा , यातनाओं के पहाड टूटते रहेंगे , तुम मूक बने भूखे प्यासे सब कुछ झेलते रहोगे पर कोई तुम्हारी पीडा नहीं समझेगा , जीवन की लम्बी यात्रा स्वंय ही तय करनी होगी । "याद करो, समझो"।

209। काम कोध व अहंकार आदि से भजन पूजा जैसे सत्कर्म नष्ट हो जाते हैं केवल शांत चित्त होकर हृदय से पूजा आराधना करने से ही भगवान मिलेंगे ।

210। बुद्धि ही सब कुछ नहीं है , ऐसा होता तो विश्व के सब क्षेत्रों के विद्वान तर जाते, कल्याण के लिये सात्विक बुद्धि. , श्रद्धा , भक्ति व ईश्वर में अटूट विश्वास और सच्चे मन की आराधना चाहिये , मुक्ति व कल्याण तभी मिलेगा ।

211। कोयल एक ऐसा पंछी है उसकी मीठी आवाज मन को मोह लेती है कोंधती हुई हृदय में समा जाती है रंग से काली पर आवाज में सोना भरा है जो मन को ईश्वरीय अनुभूति प्रदान करता है।

212। उस परम ब्रह्म परमात्मा का उपकार है मुक्ति के लिये मानव जीवन हमें मिला , हमें हृदय से उसका चिन्तन कर लाभ उठाना चाहिये ।

213। यदि आपके पास ज्ञान ज्योति है तो आप दूसरों को भी प्रकाशित कर सकते हैं यह एक दैविक धरोहर है जो ईश्वर ने आपको भेंट स्वरूप दी है सबके उपकार के लिये यदि आप अपने तक ही इसे सीमित रखते हैं तो यह अन्याय है व ईश्वर के प्रति अविश्वास है।

214। दया व सहनशीलता हृदय के सब विकारों को दूरकर पवित्रता लाते हैं अच्छे विचारों का उदय होता है मनुष्य का कल्याण होता है मुक्ति मिलती है। क्रोध व अहंकार विनाशकारी होते हैं सत्कर्मों को ध्वस्त कर , अशान्ति पैदा करते हैं नरक की ओर ले जाते हैं ।

215। सात्विक ज्ञान वाला व्यक्ति ईश्वर होने की क्षमता रखता है उसी परब्रह्म परमात्मा का अंश है आत्मज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो जाता है , अहंकारी व्यक्ति ईर्ष्या ,द्वेष, मद, लोभ आदि बुरे विचारों के वशीभूत अधोगति को प्राप्त होता है।

216। भावनायें अच्छी हों तो विचार भी अच्छे होंगे संसार सागर से तरने के लिये , तामसी राजसी वृत्ति वाले संसार में भटकते ही रहेंगे ।

217। प्रज्वलित अग्नि में सब वस्तुयें जल कर नष्ट हो जाती हैं हृदय की आराधना, राग व भक्ति काम क्रोध लोभ ईर्ष्या मद व अहंकार को मिटा देती है।

218। ईश्वर ने समझ व बुद्धि सब प्राणियों व जानवरों को दी है उनकी योग्यता के अनुसार । यदि हम उसका उपयोग ठीक से नहीं करते हैं तो हम इस वरदान से व उनके आशीर्वाद से वंचित रहते हैं ।

219। प्रभु के वरदान के पीछे कोई एक शक्ति विद्यमान रहती है वरदान तो आवरण मात्र है जैसे सच के पीछे पुण्य व सत्कर्म छिपे रहते हैं झूठ के पीछे पाप और दुष्कर्म , सच और झूठ तो आवरण मात्र होते हैं ।

220। तुम्हारे अन्दर परम ब्रह्म परमात्मा और तुम एक ही हो , मायारूपी काली छाया की धुंध के कारण तुम उसको नहीं पहचान पाते हो जिस दिन वह अन्दर से दूर हो जायेगी तो तुम्हें दोनों में कोई अन्तर नहीं लगेगा ।

221। यह हीन भावना मन से त्याग दो कि मैं पापी , अपवित्र हूँ , शरीर तो नाशवान है आत्मा अजर अमर है वही परमात्म स्वरूप है तुम उसको राग भक्ति आराधना से जानने का प्रयत्न तो करो, हीन भावना समाप्त हो जायेगी और परमात्मज्ञान हो जायेगा।

222। मन की भी अपनी विशेष अवस्था होती है जब वह जाग्रत अवस्था में आत्मा में विलीन होता है समाधि की अवस्था होती है जब वह अज्ञान अवस्था में आत्मा में विलीन होता है तब व्यक्ति निद्रा में होता है ।

223। स्वयं अपने ज्ञान व अज्ञान से परिचित होने वाला ही परम ज्ञानी है ।

224। अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनने वाला सर्वदा सुखी रहता है मन की आवाज सुनने वाला दुखी ही होता है उसे ईश्वर नहीं मिलते ।

225। मनुष्य की इच्छायें अनन्त हैं उन्हीं को पूरा करने को वह भटकता रहता है संतोष नहीं पाता है , किसी ऐसी वस्तु की कामना उसे रहती है जिससे वह संतोष पा सके यदि वह इन भौतिक वस्तुओं को त्याग कर शांत चित्त होकर ईश्वर का भजन ध्यान करे तो उसके सब विकार दूर होकर उसे सच्ची स्थायी शान्ति अवश्य मिलेगी ।

226। ईश्वर प्राप्त महापुरुषों का स्वभाव बालकों जैसा हो जाता है अहंकार नहीं होता सरल स्वभाव के होते हैं उनकी शक्ति ईश्वर , पिता की शक्ति होती है वे सबमें ईश्वर को देखते व ईश्वरीय प्रेम में लीन रहते हैं ।

227। गीता , रामायण भागवत, गुरू ग्रन्थ साहिब, कुराण व बाईबिल सब पवित्र ग्रन्थों का एक ही आदेश है ,"सब प्राणियों में वही विद्यमान है निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा करो, सब को अपना समझो, बुराईयों से दूर रहो, सत्य व प्रेम का मार्ग चुनो, विश्व बंधुत्व की भावना रखो" सब धर्मों के पीछे एक ही सत्ता है धर्मों को अलग बनाया है तो मनुष्य ने ही ।

228। दया से करूणा का स्थान ऊँचा है करूणा में प्रेम भाव, भक्ति व समर्पण के साथ साथ सेवाभाव भी होता है।करूणा से हृदय पवित्र होता है आत्म शुद्धि होती है ईश्वर को पाने का मार्ग सुगम हो जाता है।

229 | यह सुन्दर काया जिसे हम प्रसाधनों से सजाते हैं इतना पैसा, समय नष्ट करते हैं सब नाशवान है समय बीतने पर कुरूप होकर नष्ट हो जायेगी, यदि हम उतना समय भजन पूजा में लगायें तो हमारी आत्मिक शुद्धि होगी और भगवान को पा सकते हैं मोक्ष मिल सकता है क्योंकि आत्मा अजर अमर है।

230 | भय रहित जीवन ही सबसे वडी स्वतंत्रता है।

231 | एक माँ अपने बच्चे की जननी होने के साथ साथ उसके भविष्य की निर्माता भी है उसका अच्छा पोषण उसका भविष्य उज्ज्वल ही बनायेगा , अंधकारमय नहीं ।

232 | कर्मो का फल भी अपनी जगह बहुत महत्व रखता है। दो बैलों में एक बैल जिसके पिछले जन्म में अच्छे कर्म होते हैं वह नादिया बैल बनकर गेरूआ वस्त्र पहन कर त्यौहारों पर अपने स्वामी के साथ हर द्वार पर जाकर अपनी पूजा कराता है अच्छा खाना खाता है और दूसरा बुरे कर्म वाला बैलगाडी में जोता जाता है बोझा ढोता है मार खाता है यातनायें सहता है ।

233 | एक सीधे सादे गरीब व्यक्ति का मन कुन्दन जैसा होता है जो जीवन के सब दुख दर्द व नाना प्रकार के कष्टों को सहकर सच्चाई से जीवन यापन करता है, थोडे धन में संतुष्ट रहता है इसके विपरीत एक कपटी धनी का मन विष तुल्य होता है, छल कपट झूठ इत्यादि का सहारा लेकर गरीबों का शोषण कर धन एकत्र कर ऐश्वर्य का जीवन बिताता है।

234। इन्द्रियों का स्वामी मन है मन का स्वामी आत्मा है अत: मन बीच की कडी है यदि हम भजन पूजा करें, हृदय से उस परम ब्रह्म परमात्मा की आराधना कर मन को स्थिर कर वश में कर लें तो इन्द्रियाँ तो वश में हो ही जायेंगी, साथ ही मन का आत्मा के साथ संयोग होकर आत्म साक्षात्कार होगा और जन्म मरण से छुटकारा पाकर ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

235। बाँध से अथाह पानी का वेग जैसे थम जाता है और आगे नहीं बढता उसी प्रकार काम कोध लोभ अहंकार ईर्ष्या राग व द्वेष आदि बुरी बातों का वेग भी भजन पूजा कीर्त्तन सत्संग व मन से आराधना करने से रुक जाता है उसी की कृपा से वे सब नष्ट भी हो जाते हैं।

236। जैसे लोहा पारस के संयोग में आने से सोना हो जाता है उसी प्रकार आत्म ज्योति के संयोग में आने से मन शुद्ध होकर स्थिर हो जाता है और बुद्धि भी उज्ज्वल और प्रखर हो जाती है, सब विकार दूर होकर परमार्थ का मार्ग प्रशस्त होता है।

237। संसार में परम ब्रह्म परमात्मा ही सब करता है व कराता है, अज्ञानी कहते हैं मैंने यह किया ,उसकी सहायता की , उसने मेरी सहायता की यह सब मिथ्या है व मृगतृष्णा है ईश्वर ही सबको प्रेरणा देता है वही सबसे करा रहा है वही कर्त्ता है , ज्ञानी अपने को हमेशा अकर्त्ता ही समझते हैं।

238। विचार मस्तिष्क का मुख्य कार्य है।

239। जब आराधना करते करते अन्तिम शिखर तक पहुँच जाते हैं समाधि लग जाती है अन्तरात्मा प्रभु की ज्योति में विलीन हो जाती है तब मनुष्य का नश्वर शरीर यहीं रह जाता है और वह जन्म मरण के बन्धन से छूट जाता है।

240। भगवान को पाने के लिये पैसा और वासना दोनों को त्यागना होगा, एकांत में मन से ध्यान करने से, व्याकुल होकर रोने से उनके दर्शन अवश्य होते हैं विषय पर विषयी की, पुत्र पर माता की और पति पर सती की यह तीन प्रकार की चाह एकत्रित होकर व्याकुलता से जब प्रेम होता है तभी भगवान मिलते हैं और दर्शन होते हैं

241। विभूतियों के लिये तंत्र के मत से पंच मकार की साधना करते हैं परन्तु उनकी बुद्धि कितनी हीन है। कृष्ण ने अर्जुन से कहा भाई , अष्टसिद्धियों में किसी एक के रहने पर तुम्हारी शक्ति तो थोडी बढ जायेगी, परन्तु मुझे नहीं पाओगे। विभूतियों के रहते माया दूर नहीं होती और माया से फिर अहंकार होता है , अहंकार सब बुराइयों की जड है।

242। आजकल दूरदर्शन के कार्यक्रम बच्चों के कोमल हृदय पर कारगर असर डाल सकते हैं क्योंकि ज्यादातर बच्चे दूरदर्शन देखते हैं यह दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर निर्भर करता है यदि विज्ञापन अश्लील और गंदे हैं बच्चे भी पथभ्रष्ट और निकम्मे होंगे , यदि शिक्षाप्रद व अच्छे हैं तो उनका भविष्य भी उज्ज्वल होगा और इससे देश का भविष्य भी उज्ज्वल ही होगा।

243। प्रभु भक्ति में जो आत्मसमर्पण करके लग जाता है नतमस्तक हो जाता है वह प्रभु कृपा का अधिकारी हो जाता है प्रभु भी उसे सब पापों से मुक्त कर देते हैं उसका उद्धार कर देते हैं अपनी शरण में हमेशा के लिये ले लेते हैं ।

244। जो सेवाभरी मुस्कान आप दूसरों की भलाई के लिये दे सकते हैं उसे आगे के लिये मत टालिये ।

245। पुण्य कर्म, दान व समाज सेवा इत्यादि अच्छे कर्म केवल आडम्बर के लिये नहीं करने चाहियें उससे उसका महत्व व गरिमा नष्ट हो जाती है, ईश्वर को पाना है तो सब कुछ निस्वार्थ भाव से अर्पण करना चाहिये ।

246। एक अच्छी पुस्तक एक अच्छा मित्र होता है ।

247। जिसके पास पैसा जितना कम उतनी ही कीमत ज्यादा , और जिसके पास जितना अधिक उतनी ही कीमत कम , यह आर्थिक नियम है।

248। हृदय की पवित्रता, स्वच्छता का व्यक्ति के चरित्र को उज्ज्वल बनाने में बहुत बडा योगदान है। सच्चे मन से प्रेम व राग भक्ति से ईश्वर को पाने के लिये मन को स्वच्छ पवित्र रखना चाहिये। हिंसा , अहंकार , काम , बैर व ईर्ष्या आदि विकारों से दूर रहना चाहिये।

249। भगवद् प्राप्ति के लिये हृदय की पवित्रता व स्थिर बुद्धि की नितान्त आवश्यकता है।

250। भगवान के प्रति सच्चा और निष्ठावान प्रेम उनका मन जीत लेता है भले ही ऐसे भक्त का विश्व विरोधी हो जाये परन्तु ईश्वर उसका साथ अन्त तक निभाता है यहाँ तक कि नाशवान संसार से चल बसने के बाद तक भी साथ देता है, इसके अनेकों उदाहरण मिलते हैं ।

251। खुशी जो आप देते हैं उस पर निर्भर करती है जो पाते हैं उस पर नहीं ।

252। ईश्वर की महिमा सच्चे अर्थ में उन्हीं के लिये है जो अपने हृदय में व व्यक्तिगत जीवन में संजो कर रखते हैं ।

253। परम ब्रह्म परमात्मा की सत्ता ही व्यक्ति की जीवन व्यवस्था चलाती है यदि नादान इतना समझ ले , अहंकार छोड दे , तो मुक्ति ही हो जाये ।

254। हृदय के शुभ विचार ही शुभ कर्मो के जन्मदाता होते हैं जो मानसिक शान्ति प्रदान करते हैं और भगवान में मन लगाते हैं, पाप और दुख अशान्ति के कारण होते हैं जो मनुष्य को संसार में बाँधे रहते हैं।

255। आजकल विश्व में अश्लील पत्र, पत्रिकायें, विज्ञापन, चलचित्र, सौन्दर्य प्रतियोगितायें व अन्य इसी प्रकार के कार्यक्रम चरित्रहीनता का प्रदूषण फैलाते हैं सारा वातावरण दूषित करते हैं समाज में इन विकारों को बढावा देकर चरित्र निर्माण नहीं हो पाता है।

256। हृदय में अच्छे बुरे सभी तरह के विचारों का आगमन होता है किसी भी औषध से उसका उपचार नहीं किया जा सकता, यदि कोई उपचार है तो केवल एक

मनोवैज्ञानिक उपचार है, और वह है सत्संग, जिससे बुरे विचारों को अच्छे विचारों में बदला जा सकता है।

257। सत्य को अपनाना ही उत्तम सिद्धान्त है।

258। गुरू के प्रभाव व प्रताप से व्यक्ति कीर्त्तन भजन सत्संग से उस परम ज्ञान को समझ लेता है और फलदार वृक्ष की तरह नीचे झुक जाता है आत्मसाक्षात्कार कर ईश्वर की कृपा से संसार को त्याग कर मोक्ष को प्राप्त होता है इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। "ईश्वर को जानना श्रेष्ठ है"।

259। पहले गहराई से सोचो, फिर अच्छी तरह समझो, उसके बाद कोई कार्य करने के लिये हाथ बढाओ ।

260। परमात्मा में ध्यान लगाने के लिये शान्त चित्त व एकांतवास अति आवश्यक है जैसे दीपक की लौ के लिये स्थिर वातावरण की आवश्यकता है।

261। हमेशा दुखों को अपनाओ, दोषों को त्यागो , इससे हृदय शुद्ध होता है आत्म बल बढता है और परमात्मा की प्राप्ति होती है, दोषों से हृदय अपवित्र होता है आत्मबल क्षीण होता है और पापी बन इस संसार में ही रहना पडता है।

262। मनुष्य सांसारिक विषयों में आसक्त होकर सुख और शान्ति की खोज करता है यह उसकी नादानी है चिर सुख और शान्ति चाहिये तो परमात्मा की शरण में जाना चाहिये, हृदय से भजन

आराधना करनी चाहिये ताकि आत्म साक्षात्कार हो सच्चा सुख और शान्ति मिले और संसार से छुटकारा भी मिले ।

263। जिस प्रकार एक माह का अबोध बालक दुनियाँ भर के मोह माया और सब प्रकार के विकारों से परे निर्लिप्त सच्चिदानन्द स्वरूप होता है उसी प्रकार एक सच्चा सन्यासी जिसने दुनियाँ के सब विकारों व मोह माया को हृदय से त्याग कर उस परम ब्रह्म परमात्मा की शरण में चला गया हो उसकी भी वही अवस्था होती है और मुक्ति पाता है।

264। अंधेरे स्थान पर दिया जलाने से जैसे अंधेरा तुरन्त दूर हो जाता है वैसे ही हम भक्ति और सत्संग से अपने हृदय के काम कोध लोभ मोह अहंकार व ईर्ष्या आदि विकारों को दूर कर ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं।

265। आज की दुनियाँ में जिसका बहुत नाम हो, ऊँची जगह पर हो, बहुत पैसे वाला हो उसी को वी आई पी समझा जाता है चाहे वह अन्दर से कितना भी बडा दुराचारी हो कपटी हो शराबी हो जुआरी हो दु:चरित्र हो और चाहे दुनियाँ भर के अवगुण उसमें हों , परन्तु परमात्मा की सत्ता में वही वी आई पी होता है जिसका हृदय अन्दर से बिल्कुल पवित्र हो , जो निस्वार्थ सेवा करता हो , दुनियाँ के सब विकारों से दूर हो अनन्य भाव से उसका भक्त हो भले ही वह गरीब हो सादा हो ।

266। मनुष्य खुद अपने ही बारे में ही कुछ नहीं जानता पर बडा ज्ञानी ध्यानी बना फिरता है जब सफलता मिलती है तो वह अपने को ध्येय देता है और असफलता हाथ लगती है तो भाग्य को दोष देता है यह मूर्खता ही तो है ।

267। मनुष्य जीवन की शुरूआत कोई नई बात नहीं है वो तो चौरासी लाख योनियों में से एक है ही। उसके असली जीवन की शुरुआत तो जब होती है जब मनुष्य भगवान को जानने व पहचानने लगता है और जब उसे सच्चा ज्ञान हो जाता है तब सब चौरासी लाख बंधनों को छोडकर वह भगवान की ओर व मुक्त मार्ग की ओर अग्रसर होता है बस वही है उसके सच्चे जीवन की शुरुआत व यात्रा ।

268। भौतिक सुखों की चाहत क्षणिक व दुखदायी होती है और आध्यात्मिक सुखों की चाहत चिर सुख शान्ति देने वाली होती है फिर भी मनुष्य अध्यात्मवाद छोडकर हमेशा भौतिकवाद की ओर अंतिम साँस तक दौडता रहता है अंत में पछताता है और दुख और पाप का भागी होता है और आध्यात्मिकता चिर शान्ति व ईश्वर से मिलाती है ।

269। भारत एक महान देश है यह धर्म और तीर्थस्थानों का स्थल व त्याग और बलिदान की पुण्य भूमि भी है । यह हमारे अवतारों , देवताओं , संत महात्माओं देशभक्त व वीर पुरुषों की जन्म तथा कर्म भूमि भी है। इस देश की संस्कृति पूरे विश्व में सराहनीय है और हर भारतीय को अपने देश पर गर्व है।

270। सत्य की परिभाषा बडी सरल है किसी वस्तु को वास्तविक रूप में रखना या उल्लेख करना ही सत्य है माया के कारण सत्य का बहुत महत्व है मायामय बुद्धि स्वार्थी होती है इसलिये संसार में माया स्वार्थ के कारण ही उसे अपने असली रूप में प्रकट नहीं होने देती और स्वार्थ रहित बुद्धि उसे अपने असली रूप में प्रकट होने देती है जिसे सत्य कहते हैं । माया के रहते सत्य को अपने असली रूप में लाना बहुत कठिन हो जाता है जो भगवान को पाने के तुल्य कठिन है इसलिये सत्य का और भी बहुत महत्व हो गया है।

271। हर व्यक्ति के जीवन में एक ही लक्ष होना चाहिये वह है मुक्ति प्राप्त करने का, जिसके लिये ई श्वर ने हमें यह दुर्लभ मनुष्य जीवन दिया है संसार में लक्ष केवल धन संपत्ति इकट्ठा करने का ही नहीं होना चाहिये। जब तक हम गृहस्थ जीवन में हैं अपना दायित्व समझकर अपनी गृहस्थी का ईमानदारी से पालन करना चाहिये इसी बीच ईश्वर को भी याद रखना चाहिये जब गृहस्थी का दायित्व पूरा हो जाये तो अपना लक्ष सिर्फ मोक्ष प्राप्ति का होना चाहिये जिसके लिये ईश्वर ने हमें मनुष्य जीवन दिया है ।

272। आजकल किसी भी क्षेत्र के सार्वजनिक लोकप्रिय व प्रतिष्ठित व्यक्ति सब कुछ गलत काम करते हुये भी पकडे जाने पर अपने आप को सार्वजनिक तौर पर पाक साफ व निर्दोष बताते हैं ऐसे में उनकी समाज में लोगों के मन में ग्रहण और निरादर के अलावा कुछ नहीं रहता चाहे वह अपने आप को कुछ भी समझें , उन्हें शर्म आनी चाहिये।

273। छोटी छोटी स्वार्थ भेदभाव व अन्याय की बातें बहुत अर्थ रखती हैं ये ही बातें आगे चलकर इतना उग्र रूप धारण कर लेती हैं कि अपने श्रेष्ठ व आदरणीय व्यक्तियों का अपमान भी करा लेती हैं इससे उसके हृदय के अन्दर की सच्ची कपट व ईर्ष्या सामने आती है इस प्रकार की मनोवृत्ति वाला व्यक्ति कभी भी भगवान को प्रिय नहीं हो सकता और उसे अधोगति व नरक के अलावा कुछ नहीं मिल सकता ।

274। संसार के सब जीवों में उसी परम ब्रह्म परमेश्वर का अंश आत्मा के रूप में है शरीर तो सबके नाशवान हैं शरीरों के त्यागने के बाद आत्माओं की सत्ता अलग होती है उस अखंड सत्ता का राजा परमेश्वर ही होता है और अपने अपने कर्मों के अनुसार वही उनको शरीरों में धारण कराता है या फिर मुक्ति भी दिलाता है ।

275। किसी देश के लिये युद्ध अभिशाप होता है आध्यात्मिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं रह जाता , जन हानि होती है आर्थिक स्थिति चरमरा जाती है जिससे पूरे देश की जनता व देश त्रस्त होता है उन्नति के स्थान पर देश का पतन शुरु हो जाता है परन्तु देश की अखंडता व रक्षा के लिये इसके अलावा कोई चारा भी नहीं होता जीत होती है तो देश का गौरव होता है हार गुलामी का कारण बनती है ।

276। अच्छे विचारों का उत्साह जीवन के हर क्षेत्र में बहुत से अच्छे काम कराता है और विकास व उन्नति होती है व पूरा जीवन हर्षोल्लास से परिपूर्ण होता है इसके विपरीत बुरे विचारों

का उत्साह जीवन भर दुखदायी व अशान्ति से पूर्ण होता है और जीवन पूरा नर्क बन जाता है इसलिये अच्छे विचारों को बढावा देना ही समझदारी है व गुणकारी है।

277। दुख और सुख को समान रूप से स्वीकार करने व समझने पर ही सुख और शान्ति जीवन में पाई जा सकती है ।

278। कर्म की जननी है "उत्साह" जिसके बिना कोई भी महान कार्य करना संभव नहीं ।

279। हमसे आत्म ज्ञान कहीं दूर नहीं है अपने स्वंय के स्वरूप का ज्ञान ही आत्मज्ञान है और वहीं ई श्वर का साक्षात्कार होता है।

280। संसार पाप और दुखों का एक बडा समुद्र है जो इसके मायाजाल में फँसा वह जन्म जन्मान्तर इसी में गोते खाता रहता है जिसने प्रभु का सहारा लिया उसे छुटकारा मिल जाता है और वही सच्ची स्थायी शान्ति व सुख पाता है ।

281। हृदय से भजन , ध्यान कीर्त्तन व उसकी आराधना करने से व्यक्ति के अन्दर हृदय में आंतरिक व दैविक प्रसन्नता निर्मित होती है पापों का नाश होता है और हर जीव में ईश्वर के दर्शन होते हैं व अंत में संसार से मुक्ति मिलती है ।

282। सच्चा व निस्वार्थ प्रेम भगवान का ही रूप होता है यह सत्व रज और तमोगुण से भी परे होता है यह वो दिव्य मणि है जिसके बिना आज तक किसी भी भक्त ने भगवान को नहीं पाया। जहाँ

सच्चा निस्वार्थ प्रेम है वहाँ भगवान स्वयं भक्त के सामने ही उपस्थित रहते हैं इसमें कोई संदेह नहीं है।

283। हम भारतीयों का विश्व में हमेशा मानवीय दृष्टिकोण रहा है हम हमेशा अपनी सरहदों तक ही सीमित रहे हैं किसी देश की सीमा पर कभी भी अपने देश की उन्नति व सीमा का प्रसार नहीं किया है हमेशा अपने देश की रक्षा की है आक्रमण नहीं किया । इस देश के पूर्वजों ने हमेशा विश्व में मानवीयता का पाठ पढाया है पूरा विश्व इसके लिये गवाह है । जो देश हमेशा आतंकवाद के साये में रहते हैं और दूसरे देशों में आतंकवाद फैलाते हैं उनके हाथ विनाश के अलावा कुछ नहीं लगता है यह दिव्य वरदान है वो देश नष्ट हो जाते हैं ।

284। सद्व्यवहार और सदाचार दोनों ही महान हैं इन दोनों को जीवन में अपनाने से दुश्मन भी अपने मित्र हो जाते हैं जीवन में पवित्रता आ जाती है अंत:करण शुद्ध होता है मनुष्य प्रभु को पाकर मुक्त हो जाता है।

285। प्राकृतिक रूप से "सत्य" हमेशा अपने आप में आविष्कृत है इसका न किसी ने आविष्कार अभी तक किया है और न आगे इसका कोई दावा कर सकता है ।

286। चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बडा विद्वान हो नामी हो ऊँची जगह पर हो या बहुत पैसे वाला हो तो भी अगर वह अच्छा आदमी नहीं है तो उसकी संगत नहीं करनी चाहिये क्योंकि जैसे सर्प के पास मणि होती है उसमें विष भी होता है और कभी भी जान ले सकता है ।

287। जिसके अन्दर समर्पण दया व प्रेम सब के प्रति समान भाव से होता है वह व्यक्ति संसार में रहकर यदि थोडा सा भी ईश्वर को पाने के लिये प्रयत्न करे तो इन गुणों के प्रभाव से शीघ्र ही ईश्वर को पाकर मुक्त हो सकता है।

288। मनुष्य शुरू से ही सोचता है अच्छा पढ जाऊँगा नौकरी मिल जायेगी सुन्दर स्त्री से शादी हो जायेगी तो मैं सुखी हो जाउँगा । फिर सोचता है कि खूब पैसा व संपत्ति हो जायेगी तो सुखी हो जाऊँगा पर सोचते सोचते सब कुछ पा लेने पर भी उसे सुख शान्ति नहीं मिलती । सच्चा सुख व शान्ति तो अपने आपको प्रभु के ऊपर छोडकर हृदय से उसकी आराधना भजन ध्यान करने से , आत्म संतुष्टि से मिलती है जिससे आन्तरिक सुख शान्ति व मुक्ति मिलती है ।

289। जिस प्रकार एक दीपक से हजार दीपक जलाये जा सकते हैं इसी तरह अनंत ज्ञान दीप से असंख्य जनों के हृदय में ज्ञान दीप प्रज्वलित किये जा सकते हैं अज्ञान अंधकार को दूरकर जीवन को नई दिशा दी जा सकती है सच्चा ज्ञान प्राप्त कर प्रभु प्राप्त किये जा सकते हैं ।

290। व्यक्ति के जीवन में उन्नति और पतन उसके कर्मों पर ही निर्भर करते हैं कुसंगति उसे डुबा देती है पुरुषार्थ से उन्नति होती है सत्संग भजन से आने वाला जीवन भी सुधर जाता है ईश्वर प्राप्ति होती है। कर्म ही श्रेष्ठ हैं।

291। जो विश्व के लुभावने व सुन्दर और क्षणिक सुखों का भोग करता है और उन्हीं में रमा रहता है उसका जीवन भी उन्हीं के साथ समाप्त हो जाता है व जन्म मरण के बंधन से मुक्त नहीं हो पाता जो सांसारिक सुखों को त्याग कर हमेशा प्रभु को याद करता है और हृदय से सर्व

था उसका स्मरण करता रहता है वह जन्म मरण के बंधन से मुक्त होकर प्रभु के परम धाम को प्राप्त होता है ।

292। जो ज्ञान सांसारिक सुखों को प्राप्त करने व संसार के मोह माया में ही अपनी शक्ति लगाता है वह ज्ञान नहीं अज्ञान है व जन्म जन्मान्तर संसार में ही निरूद्ध रखता है और जो ज्ञान अपनी शक्ति अपने स्वरूप को पहचानने और आत्मसाक्षात्कार करने में ही लगाता रहता है वह सच्चा ज्ञान है उससे व्यक्ति आत्म ज्ञान प्राप्त कर परम ब्रह्म परमात्मा का दर्शन कर संसार से तर जाता है फिर पुनर्जन्म नहीं होता ।

293। "कल्पना " सिर्फ मस्तिष्क की एक छोटी सी भावना होती है जो कर्म से परे होती है यदि उसे कर्म का रूप दिया जाये तो अच्छी कल्पना हमेशा सुखदायी होती है और बुरी दुखदायी होती है।

294। आज का वातावरण इतना गंदा हो चुका है कि किसी किसी व्यक्ति की अन्तरआत्मा तो बिल्कुल मर चुकी है वह गंदे नाले के कीडे की तरह उसी में रहना पसंद करता है ऊपरी दिखावे शान शौकत को ही अच्छा समझता है पैसा उसके लिये सब कुछ है इज्जत भी दाव पर लगा देता है पता नहीं भगवान उसे कौन से नर्क के लिये स्वीकार करेंगे , ऐसे लोग कभी नहीं सुधरते हैं मरने के बाद भी उन्हें नरक ही पसन्द है।

295। व्रत तप दान पूजा व आराधना आदि अच्छे काम इसलिये किये जाते हैं कि हृदय की शुद्धि हो ईश्वर का शुभ आशीर्वाद मिले हम परमात्मा को जानें आत्म ज्ञान प्राप्त करें भवसागर से मुक्ति पायें । यदि अच्छे कामों के पीछे ईश्वर प्राप्ति का लक्ष नहीं है स्वार्थ है तो सब बेकार है।

296। धैर्यवान व विद्वान महापुरुष मान अपमान निंदा स्तुति इत्यादि सब में सम रहता है उस निर्लिप्त महापुरुष का मन भी एकाग्र व अविचल होता है जैसे शांत वातावरण में दीपक की लौ स्थिर रहती है । अंत में वह प्रभु के नाम की हृदय में ज्योति संजोता हुआ परमात्मा को प्राप्त होता है ।

297। ब्रह्म ज्ञानी पुरुष दुनियाँ के सब विकारों से परे अपने आप में ही आत्म संतुष्ट रहता है हृदय से उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का चिंतन करता रहता है इतना पवित्र हो जाता है जहाँ बैठता है वहीं तीर्थ हो जाता है जिसे स्पर्श करता है वह भी इस संसार से तर जाता है ।

298। प्रमाद इन्द्रियों की व चंचलता मन की अपवित्रता है यदि मन और इन्द्रियों की पवित्रता चाहते हैं तो अपने मन को एकाग्र कर प्रभु के ध्यान में हृदय से निरुद्ध करें और अभ्यास द्वारा मन को व इन्द्रियों को वश में करें उसकी कृपा से दोनों पवित्र होकर वश में हो जायेंगे ।

299। अच्छे बहुमूल्य वस्त्र , आभूषण पहनना अच्छे व उच्च्य चरित्र का द्योतक नहीं है।

300। धार्मिक पुस्तकें ग्रन्थ प्रवचन व लिखित रूप में समस्त ज्ञान की सामग्री अमूल्य सामग्री है जो भी उसका उपयोग करेगा जीवन सुधर जायेगा लोक परलोक भी सुधर जायेगा व परमार्थ को प्राप्त करेगा । पैसा रुपया व अचल सम्पत्ति तो जब तक सांस है तब तक संबंध है उसके बाद यहीं रह जाने वाला है क्षणिक है नरकगामी है।

301। दीन दुखियों की गरीबों की असहायों की निस्वार्थ भाव से सेवा करना हर मानव का कर्त्तव्य है और सबसे बडी पूजा है भगवान से मिलाती है ।

302। जो व्यक्ति सब विकारों से दूर रहकर अपने निहित कार्यो को पूजा समझ कर करता है उसका जीवन पूजामय हो जाता है ।

303। यह आवश्यक नहीं है कि अच्छे व्यक्ति के हृदय में भक्ति हो उसी को भगवान अपनाते हैं गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है यदि कोई अतिशय दुराचारी भी मन में यह दृढ निश्चय कर ले कि भगवान ही सब कुछ हैं तो वह मेरा परम भक्त है और भगवान उसे अपना लेते हैं जैसे बच्चा कितना भी गंदा क्यों न हो यदि रो रोकर माँ को पुकार रहा हो तो उसे माँ सब काम छोडकर तुरन्त प्यार से गले लगा लेती है कोई संकोच नहीं करती ।

304। पेड पौधे जानवर मनुष्य व समस्त प्राणी हमारे सगे संबंधी हैं क्योंकि सब में वही परम ब्रह्म परमात्मा व्याप्त है ।

305। अगर हम सच्चे संत हैं तो सब आरामदेय वस्तुओं को त्याग कर हमें जनसाधारण व्यक्तियों का जीवन निर्वाह करना चाहिये तभी हमारा संत जीवन सार्थक होगा और प्रभु के प्रति जवाब देने लायक होंगे आडंबर ठीक नहीं ।

306। व्यवहार ही व्यक्तित्व का दर्पण है।

307। जीवन में जितना आडम्बर रख रखाव ,सम्पत्ति और फैलाव ज्यादा होगा उतना ही व्यक्ति के हृदय में भय व अशान्ति होगी ईश्वर से हमेशा दूर रहेगा । सादगी से रहने वाला प्रभु भक्त, उसके पास, निर्भीक, शांत और सुखी रहेगा ।

308। पूजा तप दान व भक्ति आदि अच्छे कामों का बखान नहीं करना चाहिये इससे उसकी गरिमा, महत्व व फल नष्ट हो जाते हैं परन्तु दुष्कर्मों का उल्लेख करना चाहिये ताकि उन्हें दूर कर हम अपने हृदय को शुद्ध कर सकें ।

309। सब व्यक्तियों प्राणियों व लाखों करोडों पौधों के अन्दर की व्यवस्था स्वयं ही सुचारू रूप से चलती रहती है वे जानते भी नहीं हैं कैसे सब चल रहा है यह केवल उस परमात्मा की ही कृपा है मनुष्य की अनभिज्ञता है कि जब वह कुछ भी करता है अपने को ज्ञानी समझ बैठता है ।

310। मन की स्थिति विचित्र होती है आदर मान देने वालों को अच्छा समझता है न देने वालों को बुरा समझता है । दृढ और स्थिर मन वही है जो आदर और तिरस्कार करने वालों को समान समझता है उसी की आत्मा शुद्ध मानी जाती है।

311। विनम्रता मानवता का पर्याय है ।

312। संसार में अच्छा बुरा कुछ भी नहीं, हमारा दृष्टिकोण उसे अच्छा बुरा बनाता है।

313। हृदय की शुद्धि के लिये उपासना आवश्यक है उपासना से आत्म ज्ञान होता है, विवेक जाग्रत होता है क्षणिक संसार में रुचि नहीं रहती भगवत् प्राप्ति की ओर मन मुड जाता है जो परम सुख शान्ति के लिये नितान्त आवश्यक है ।

314। क्षणिक नाशवान सांसारिक सुखों व वस्तुओं में आस्था रखना अज्ञान है सच्चा ज्ञान तो ईश्वर में आस्था रखना व उसको पाने में है संसार को पाने में नहीं है। मणि को छोड मणि रहित सर्प के पीछे पडना कितनी बडी अज्ञानता है ।

315। यह घोर कलयुग ही तो है जब अतिशय दुराचारी , दुष्चरित्र , कपटी व देशद्रोही व्यक्ति अति प्रभावशाली माने जाते हैं , नंगापन दिखाने वाले कलाकार कला के नाम पर पूजे जाते हैं दूरदर्श न पर कार्यक्रम दिखाये जाते हैं अपना बडा ही दुर्भाग्य है।

316। मनुष्य की अनन्त वासनाओं के कारण ही उसके अनन्त कर्म फल होते हैं और उसके कर्म के अनुसार ही दुख आते हैं परन्तु मनुष्य इन सबके लिये प्रभु को दोषी ठहराता है और भाग्य को कोसता है जबकि वह स्वयं इन सबके लिये दोषी होता है।

317। सर्वशक्तिमान परमात्मा सबसे बडा चित्रकार भी है जिसने आकाश पृथ्वी व पाताल सबको बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया है ऊपर नीली बडी चादर है जिस पर लाखों सुन्दर चमकते हुये सफेद मोती बिखेर दिये हैं साथ ही सूर्य चन्द्रमा और अन्य नक्षत्र गण भी हैं धरा पर सुन्दर शुभ्र सैंकडों पहाडियाँ नदियाँ व बन हैं जिसमें हजारों पेड पौधे हैं और मन को मोहने वाले तरह तरह के फूलों से सजाया है, पृथ्वी पर मनुष्य , जानवर व सुन्दर सुन्दर पंछी , उसके चारों ओर नीला

समुद्र जिसके अन्दर रंगीन सुन्दर लाखों छोटी छोटी मछलियाँ और तरह तरह के जानवर हैं सब पर उसी का आशीर्वाद है।

318। भक्ति रहित उपासना दंभ का द्योतक है भक्ति रहित कर्म अहंकार का प्रतीक है ।

319। संस्कृति व सभ्यता एक दूसरे से जुडी हैं जिस देश की सभ्यता जैसी होगी वैसी ही उसकी संस्कृति भी होगी । अन्तर केवल इतना है सभ्यता की नकल की जा सकती है पर संस्कृति उस देश के चले आ रहे संस्कारों और धर्म से संबंधित होती है उसकी नकल करना कठिन होता है।

320। समय का कोई अवकाश नहीं होता ।

321। न्याय सत्य को कार्य रूप में परिणित करता है ताकि दोषी को दंड मिले और न्याय की स्थापना हो।

322। तथा कथित विकसित पाश्चात्य देशों में आध्यात्मिकता को अपनाने के स्थान पर इन्द्रिय सुख भोग वासना शराब व माँस का उपयोग व भौतिक सुविधाओं की इतनी बढोतरी हो गई है कि मानव जीवन की स्वाभाविकता , संवेदना , करुणा व भक्तिभावना इत्यादि नष्ट हो गये हैं रह गया है केवल बुरी प्रवृत्तियों का अंबार , दिखावा व तडक भडक जो विश्व के और देशों में भी फैलता जा रहा है ।

323। नैतिकता , धर्म व संस्कृति का राजनीति में समावेश नितान्त आवश्यक है साथ ही जनता को सदाचार सम्पन्न बनाना राज्य व्यवस्था का मुख्य कार्य है अन्यथा पूरा देश भ्रष्ट होकर विनाश के कगार पर पहुँच सकता है ।

324। मनुष्य जीवन की सार्थकता सिर्फ जन्म लेकर दुनियाँ में भोगों को भोगने, धन सम्पत्ति एकत्र करने में ही नहीं है स्वयं को पहचानने में ईश्वर को जान कर मुक्ति पाने में है पशु और मनुष्य जीवन का यही विशेष अन्तर है ।

325। किसी भी महापुरूष की महानता का मापदंड किसी भी युग में उसकी शक्ति व सम्पत्ति नहीं रही है हमेशा उसके सद्‌गुण सदाचार और उसके अच्छे चरित्र से ही आंकी गई है सभी धर्मशास्त्रियों और ऋषि मुनियों ने इसको बहुत महत्व दिया है ईश्वर को भी यही मान्य है ।

" दास विष्णु "

अन्कण ऊषा अग्रवाल द्वारा